राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

संस्कृत-रूपान्तरण-कर्त्ता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्ता
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरीजी महाराज
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **बाबुरेव सर्वमद्य, प्रशास्ति सर्वत्रैक एवाद्वितीयः ।**
स एव ब्रह्मा विष्णु, रथ महेशः स्वस्व - कार्य-करणे पुनः ॥43॥

बाबु ही आज सर्वत्र सब पर प्रशासन कर रहा है और वह ही अपना अपना कार्य करने में ब्रह्मा, विष्णु और महेश है।

The bureaucrat is today ruling over all, and he is Brahma, Vishnu and Mahesh in his work.

पत्रावल्यां तु तस्य, टिप्पणीं विना राष्ट्रपतिरपि स्वकर्म ।
कर्त्तुं नैव क्षमते, तदिदं कस्य न सुविदिमस्ति गुरुदेव ! ॥44॥

पत्रावली पर तो उस बाबु की टिप्पणी के बिना राष्ट्रपति जी भी अपना कार्य करने में समर्थ नहीं हैं, हे गुरुदेव ! यह बात किसको सुविदित नहीं है ?

Without the comment on the cover even the president is not capable of doing his work. Oh, Gurudev, who is not familiar with this wrangling?

जनयति समस्यामसौ, तत्समाधानमपि च स एव करोति ।
स्वाभीष्ट - सिसाधयिषुस् - तमेवोपास्ते सदा सर्वथैव ॥45॥

वह बाबु समस्या पैदा करता है और उसका समाधान भी वही करता है । अपने अभीष्ट को साधने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति सदा सभी प्रकार से उस बाबु की उपासना किया करता है।

The clerk is creating a problem but is not solving it. The person who wants to have his work done has to please/worship this clerk.

पूर्वज-बलि-प्रदानात् तु, समवाप्ता मुक्तिर्विदेशिप्रशासनात् ।
स्वराष्ट्र - स्वाधीनता - , सुरक्षा किं सैनिकानामेव कर्म ? ॥46॥

हमारे पूर्वजों के द्वारा किए गये अपने बलिदान से विदेशी प्रशासन से मुक्ति मिल गई क्या अब अपने राष्ट्र की स्वाधीनता की सुरक्षा करना केवल सैनिकों का ही कार्य हैं ?

Through the sacrifices of our ancestors, we got free from the foreign rulers. Is it now the duty only of the soldiers to protect the freedom of the county?

यत्रैते सैनिकाः स्व,-सुख-सुविधास्त्यक्त्वा राष्ट्रं सुरक्षन्ति ।
तत्र हन्तः ! नेतारो, मिथो हि निन्दन्त आनन्दमाप्नुवन्ति ॥47॥

जहाँ ये सैनिक अपनी सुख-सुविधाओं को त्याग कर राष्ट्र की सुरक्षा करते हैं, दुःख है, वहीं नेता लोग परस्पर एक दूसरे की निन्दा करते हुए आनन्द प्राप्त करते हैं।

It is sad that where soldiers renounce their happiness and comfort to protect the country, politicians get joy by condemning each other.

ये भ्रष्टमाचरन्तो, राष्ट्रं हानिं प्रापयन्ति दुष्ट - जनाः ।
किं न तान् विनिगृह्य नः, प्रशासनं कठोरतमं दण्डयतेऽद्य ? ॥48॥

जो दुष्ट लोग भ्रष्टाचार करते हुए राष्ट्र को हानि पहुँचा रहे हैं, उनको पकड़कर हमारा प्रशासन क्यों नहीं आज उनको कठोर से कठोर दण्ड देता है ?

Why today the administration does not catch the people who through the corruption harm the country and give them the hardest of the hardest punishment?

पुनश्च ये स्वराष्ट्रस्य गोपनीय - तथ्यानि शत्रवेऽर्पयन्ति ।
किं नहि ते स्वराष्ट्रतो, यमलोकाय प्रस्थाप्यन्ते विनिगृह्य ? ॥49॥

और फिर जो अपने राष्ट्र के गोपनीय तथ्यों को शत्रु को अर्पित करते रहते हैं, क्यों नहीं उनको पकड़कर अपने राष्ट्र से यमलोक को रवाना कर दिया जाता ?

And why are those who sell the secrets of the country to the enemies are not caught and dispatched to the Yama Loka?

(क्रमशः)